Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : अर्थशास्त्र की प्रकृति (NATURE OF ECONOMICS)

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor
Dr. Ram Prawesh
Guest Faculty (Department of Economics)
L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

अर्थशास्त्र की प्रकृति (NATURE OF ECONOMICS)

अर्थशास्त्र की प्रकृति निर्धारित करने के लिए हमें यह समझना होगा कि अर्थशास्त्र कला है अथवा विज्ञान ? विज्ञान से हमारा अभिप्राय एक सम्बद्ध ज्ञान के संग्रह से है। तथ्यों के संग्रह मात्र को ही विज्ञान नहीं कहा जा सकता है बल्कि उन तथ्यों के बीच 'कारण' और 'परिणाम' (cause and effect) के आधार पर एक सम्बन्ध पाया जाना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, विज्ञान में सम्बन्धित विषय से सम्बन्धित सर्वव्यापी समानताओं अथवा सामान्य प्रवृत्तियों को स्थापित किया जाता है जो उसके नियम कहलाते हैं। इस दृष्टि से भौतिकशास्त्र (Physics), रसायनशास्त्र (Chemistry), मनोविज्ञान (Psychology) इत्यादि सभी विज्ञान की श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। अर्थशास्त्र भी एक समुचित तथा पूर्ण विज्ञान है क्योंकि इसमें मनुष्य के व्यवहार की सामान्य प्रवृत्तियों और उनके पीछे प्रेरित उद्देश्यों का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र मानव ज्ञान की वह शाखा है जिसमें तथ्यों का क्रमबद्ध रूप से संग्रह, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार भौतिक विज्ञानों में सम्बन्धित तथ्यों की सही माप के लिए एक मापदण्ड होता है, उसी प्रकार अर्थशास्त्र में भी मानव उद्देश्यों (human motives) तथा प्रवृत्तियों (tendencies) की माप के लिए मुद्रा का मापदण्ड होता है। वास्तविकता तो यह है कि सभी सामाजिक विज्ञानों में केवल अर्थशास्त्र ही एक ऐसा विज्ञान है जो मुद्रा के मापदण्ड (mone- tary measurement) के आधार पर सबसे अधिक निश्चित विज्ञान माना जाता है।

निम्नांकित तथ्यों के आधार पर अर्थशास्त्र को विज्ञान माना जा सकता है-

(i) वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग (Use of Scientific Methods) - अर्थशास्त्र में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करके व्यक्तियों के व्यवहार का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। इसी क्रमबद्ध अध्ययन के आधार पर आर्थिक नियम प्रतिपादित किये जाते हैं।

(ii) कारण एवं परिणाम का सम्बन्ध (Relation of Cause and Effect) - विज्ञान की भाँति अर्थशास्त्र में भी कारण एवं परिणाम का सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, जैसे-कीमत परिवर्तन से माँग में परिवर्तन होता है।

(iii) सार्वभौमिक नियमों का प्रतिपादन (Establishment of Universal Laws) - अर्थशास्त्र में कारण और परिणाम की वैज्ञानिक एवं क्रमिक पद्धति के आधार पर सार्वभौमिक सत्यता वाले सामान्य नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। उपयोगिता ह्रास नियम, उत्पत्ति ह्रास नियम आदि इसके अनेक उदाहरण हैं।

(iv) मुद्रा रूपी मापदण्ड का प्रयोग (Use of Measuring Rod of Money) - भौतिक विज्ञान की भौतिक तुला के समान निश्चितता एवं सत्यता का निर्धारण करने के लिए अर्थशास्त्र में मुद्रा रूपी मापदण्ड का प्रयोग किया जाता है।

(v) पूर्वानुमान एवं भविष्यवाणी की शक्ति (Power of Forecasting and Prediction)- अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं में सम्भावित परिवर्तनों का पूर्वानुमान करके आवश्यक कदम उठाने की क्षमता निहित है। अर्थशास्त्र की नवीन शाखा अर्थमिति (Econometrics) के प्रयोग से पूर्वानुमान एवं भविष्यवाणी कर पाना अधिक सम्भव हो पाया है।

अर्थशास्त्र - वास्तविक विज्ञान के रूप में (Economics-As a Positive Science)

वास्तविक विज्ञान में केवल 'कारण' एवं 'परिणाम' (Cause and effect) के सम्बन्ध का विश्लेषण किया जाता है। आर्थिक पहलुओं में 'क्या है?' (What is ?) का विश्लेषण अर्थशास्त्र में किया जाता है और 'क्या होना चाहिए?' (What ought to be ?) जैसे नीतिगत पहलू को अर्थशास्त्र में नहीं जोड़ा जाता। प्रो. जे. बी. से, सीनियर एवं प्रो. रॉबिन्स जैसे अर्थशास्त्रियों ने इसी आधार पर अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान की श्रेणी में रखा है।

रॉबिन्स के अनुसार आर्थिक विषयों के दोनों पहलुओं- 'क्या है' और 'क्या होना चाहिए' को एक-दूसरे से अलग रखा जाना चाहिए। अर्थशास्त्र का नीतिशास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं। अर्थशास्त्र में केवल 'कारण' और 'परिणाम' का सम्बन्ध स्पष्ट किया जाता है। आर्थिक विश्लेषण की प्रत्येक शाखा में 'कारण' और 'परिणाम' का सम्बन्ध निर्धारित किया जाता है-

1. उपभोग (Consumption) - उपयोगिता ह्रास नियम बढ़ते उपभोग (अर्थात् 'कारण') और उसके कारण घटती उपयोगिता (अर्थात् 'परिणाम') के पारस्परिक सम्बन्ध को बताता है।

2. उत्पादन (Production) - उत्पत्ति ह्रास नियम में भी उत्तरोत्तर इकाइयों के बढ़ते प्रयोग एवं उससे घटती उत्पादकता वस्तुतः 'कारण' और 'परिणाम' के सम्बन्ध को ही स्पष्ट किया जाता है।

3. विनिमय (Exchange) - कीमत परिवर्तन का माँग और पूर्ति पर पड़ने वाला प्रभाव वस्तुतः 'कारण' और 'परिणाम' का ही एक उदाहरण है।

4. वितरण (Distribution) - साधनों की पूर्ति बढ़ने पर उन साधनों की कीमतें घटती हैं- यह वस्तुतः 'कारण' और 'परिणाम' का ही एक उदाहरण है।

5. राजस्व (Public Finance) - कर लगाने पर उपभोग, उत्पादन एवं वितरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा - यह 'कारण' और 'परिणाम' के सम्बन्ध को ही स्पष्ट करता है।

अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान मानने वाले अर्थशास्त्री निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं-

1. अर्थशास्त्र में 'कारण' और 'परिणाम' का वैज्ञानिक आधार पाया जाता है।

2. अर्थशास्त्र में उद्देश्यों का पूर्व निर्धारण कर लिया जाता है और उसमें परिवर्तन नहीं होता। उद्देश्यों के पूर्व-निर्धारित होने तथा अपरिवर्तित रहने के कारण अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान बन जाता है।

3. अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान मान लेने से आर्थिक विकास में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती।

4. श्रम-विभाजन तथा विशिष्टीकरण का प्रयोग अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान मानने की दशा में ही सम्भव है।

अर्थशास्त्र - आदर्श विज्ञान के रूप में (Economics-As a Normative Science)

आदर्श विज्ञान का सम्बन्ध 'क्या होना चाहिए?' (What ought to be ?) जैसे प्रश्न से है जिसमें आर्थिक पहलुओं की अच्छाई एवं बुराई के सम्बन्ध में विश्लेषण किया जाता है और तथ्य की वांछनीयता एवं अवांछनीयता पर अपना मत व्यक्त किया जाता है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों का एक बड़ा वर्ग यह स्वीकार करता है कि अर्थशास्त्र केवल एक वास्तविक विज्ञान ही नहीं है बल्कि उसका स्वरूप आदर्शात्मक (Normative) है। इस वर्ग के अर्थशास्त्रियों के अनुसार, अर्थशास्त्रियों के दायित्व का निर्वाह केवल इतनी विवेचना से ही नहीं हो जाता कि विषय-वस्तु 'क्या है' बल्कि उनका यह भी उत्तरदायित्व है कि वे यह भी बतलायें कि विषय-वस्तु 'क्या होनी चाहिए'। अर्थशास्त्र को आदर्शात्मक विज्ञान में रखने वाले अर्थशास्त्रियों में प्रमुख हैं-मार्शल, पीगू, हाट्रे, कीन्स आदि ।

हाट्रे के शब्दों में, 'अर्थशास्त्र एवं नीतिशास्त्र को पृथक् नहीं किया जा सकता। अर्थशास्त्र को न केवल मूल्यांकनों एवं नैतिक विचारों को ध्यान में रखना चाहिए बल्कि उनकी अन्तिम वैधता पर भी अपना निर्णय देना चाहिए। "

आर्थर स्मिथीज के अनुसार, "अर्थशास्त्री को चाहिए कि वह समाज के स्वास्थ्य के लिए निदान के साथ-साथ औषधि विधान भी करे। "